नवोन्मेष
रुक्टा (राष्ट्रीय)

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)
(अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ से संबद्ध)

website: www.ructarashtriya.org **Email:** info@ructarashtriya.org, ructarashtriya@gmail.com

केन्द्रीय कार्यालय : देराश्री शिक्षक सदन, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर-302004
प्रधान कार्यालय : सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर-305001 (राज.)
अध्यक्ष : डॉ. दिग्विजयसिंह शेखावत, बीकानेर मो. 9414452369, 9983007575
महामंत्री : डॉ. नारायणलाल गुप्ता, अजमेर मो. 9414497042

परिपत्र क्रं. : रुक्टा (रा.)/2017-18/05 वैशाख शु. १० वि. स. २०७५ तदनुसार 25 अप्रेल, 2018
(सभी इकाई सचिवों एवं सक्रिय सदस्यों को समस्त सदस्यों में प्रसारित करने के अनुरोध सहित प्रेषित)

प्रिय बंधु/भगिनी,

सादर नमस्कार।

विविध कारणों से परिपत्र भेजने में विलम्ब हुआ है, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। पिछले परिपत्र के पश्चात् आयुक्तालय द्वारा पदनाम परिवर्तन के आदेश, उच्च शिक्षा मंत्री व अधिकारियों के साथ बैठक, सातवें वेतनमान हेतु कार्यवाही, पे बैंड 4 की प्रक्रिया प्रारम्भ होने व उनमें विसंगतियों को दूर करने हेतु प्रयास, नवीन यू.जी.सी. ड्राफ्ट रेगुलेशन में कमियों के संबंध में यू.जी.सी. अध्यक्ष से भेंट, प्राचार्य पद हेतु डी.पी. सी. व प्रोफेसर पदों को भरने हेतु प्रयत्न, 830 असिस्टेंट प्रोफेसर्स की भर्ती, अशैक्षणिक कर्मचारियों के पदों पर नियुक्ति आदि के संबंध में गतिविधियों की जानकारी एवं कर्तव्यबोध, नवसंवत्सर व अम्बेड़कर जयंती कार्यक्रमों के विस्तृत वृत्त सहित अन्य जानकारियों के साथ यह परिपत्र आपके समक्ष प्रस्तुत है -

शिक्षक समस्याओं के संबंध में संगठन की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ

1. **पदनाम परिवर्तन के आदेश जारी** - संगठन के निरन्तर अथक प्रयासों की परिणिति में अंतत: आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने क्रमांक प8(17)रुक्टा/राष्ट्रीय/15/3919 दिनांक 23 फरवरी 2018 द्वारा राजस्थान शिक्षा सेवा (महाविद्यालय शाखा) नियम, 1986 में संशोधन के क्रम में राजकीय महाविद्यालयों के ए.जी.पी. 6000, 7000 व 8000 में कार्यरत व्याख्याताओं का पदनाम असिस्टेंट प्रोफेसर तथा ए.जी.पी. 9000 में कार्यरत व्याख्याताओं के पदनाम एसोसिएट प्रोफेसर करने के आदेश जारी कर दिए। इससे पूर्व दिनांक 2 फरवरी 2018 को राजस्थान राजपत्र विशेषांक भाग 4(ग) में पदनाम परिवर्तन की अधिसूचना का प्रकाशन किया गया। संगठन एक बार पुन: मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे जी व उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण जी माहेश्वरी का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हुए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करता है तथा आप सभी असिस्टेंट/एसोसिएट प्रोफेसर्स को बहुत-बहुत बधाई प्रेषित करता है।
2. **पात्र शिक्षकों को पे बैंड 4 देने के संबंध में कार्यवाही** - संगठन लगातार मांग करता आया है कि शिक्षकों के न्यायोचित वित्तीय अधिकार को समय पर प्रदान करने के लिए सी.ए.एस. लाभ हेतु नियमित डी.पी.सी./संवीक्षा बैठक आयोजित की जाए। संगठन द्वारा लिखे गए पत्रों, उच्च शिक्षा मंत्री जी से नियमित अन्तराल पर हुई भेंटवार्ताओं फलत: उनके द्वारा अधिकारियों को दिये गये निर्देशों के उपरान्त अन्तत: 30 जून 2013 के पश्चात् पात्र शिक्षकों को पे बैंड 4 देने संबंधी प्रक्रिया को अन्तिम रूप से वित्त एवं कार्मिक विभाग द्वारा अनुमोदन किया जाकर उक्त फाईल आयुक्तालय में पहुँची। संगठन द्वारा लम्बे समय से जारी इस संघर्ष के परिणामस्वरूप अंतत: आयुक्तालय के दिनांक 28 मार्च 2018 को जारी आदेश क्रमांक एफ1(92)पीएस/निकाशि/13/पार्ट/980 द्वारा पे बैंड 4 हेतु पात्र शिक्षकों से आवेदन मांगे गए। संगठन द्वारा शिक्षकों को उनका वित्तीय अधिकार दिलवाने में मंत्रीजी की

भूमिका हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया तथा साथ ही मांग की गई कि 30 जून 2017 के स्थान पर 30 जून 2018 तक पे बैंड 4 हेतु पात्र शिक्षकों से आवेदन मांगे जाए तथा उनकी ए.सी.आर. आने के बाद उन्हें यह लाभ दे दिया जाए ताकि इन शिक्षकों को समय पर उनका वित्तीय अधिकार मिल सके। इस संबंध में सकारात्मक कार्यवाही करने हेतु अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं, संगठन को आशा है कि आयुक्त महोदय शीघ्र अपेक्षित आदेश जारी करेंगे।

3. **पे बैंड 4 के आवेदन पत्र को नियमसंगत व न्यायसंगत बनाया जाए** - संगठन के ध्यान में आया कि वर्तमान में पे बैंड 4 के लिए मांगे गये आवेदन पत्र में ए.पी.आई. स्कोर हेतु जारी प्रोफॉर्मा में यू.जी.सी. चतुर्थ संशोधन के अनुसार विभिन्न श्रेणियों में ऊपरी सीमा लगाई गई है तथा इसके अनुसार ही सभी शिक्षकों को आवेदन करने के निर्देश दिये गये हैं। यू.जी.सी. द्वारा सी.ए.एस. नियमों में समय-समय पर संशोधन किये जाने के कारण एवं आयुक्तालय द्वारा स्पष्ट निर्देशों के अभाव में कई अनिश्चितताएं एवं उलझनें आई.क्यू.ए.सी. एवं पे बैंड-4 हेतु पात्र शिक्षकों के समक्ष आई है, संगठन द्वारा उच्च शिक्षा मंत्री एवं अधिकारियों को विस्तृत तथ्यात्मक पत्र लिख कर इस संबंध में समुचित कार्यवाही की मांग की गई। संगठन ने मांग की है कि 11 जुलाई 2016 से पूर्व पे बैंड-4 हेतु पात्र शिक्षकों के लिए उनकी पात्रता तिथि पर वैध नियम आनुपातिक आधार पर उत्तरव्यापी प्रभाव से लागू किये जाए। इस बारे में संगठन द्वारा यू.जी.सी. से जारी समुचित स्पष्टीकरण आदेश की प्रति भी संलग्न की गई है। संगठन ने यह भी प्रतिवेदित किया है कि शिक्षा (ग्रुप-4) के आदेश क्रमांक F1(06)Edu-4/2010 दिनांक 8-5-2013 में उल्लेखित सी.ए.एस. योजना के विस्तृत नियमों को शिक्षकों की जानकारी में प्रथम बार 11 मई 2015 को वेबसाईट पर अपलोड करके लाया गया था, अतः उससे पूर्व की सेवाओं हेतु पूर्वव्यापी प्रभाव से ए.पी.आई. योजना लगाना न्यायसंगत नहीं है। संगठन ने यह भी मांग की है कि जो शिक्षक पात्रता अवधि में टी.आर.एफ. या पी.डी.एफ. पर रहे हैं, उन्हें संबंधित श्रेणी के ए.पी.आई. अंकों में फैलोशिप अवधि के लिए छूट दी जाए। आयुक्तालय, विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य राजकीय विभागों में प्रशासनिक कार्यों के लिए प्रतिनियुक्त शिक्षकों को उनकी प्रतिनियुक्ति अवधि में वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन के आधार पर ही सी.ए.एस. का लाभ देने का विषय भी संगठन द्वारा उठाया गया है क्योंकि ऐसे शिक्षकों को अध्ययन/अध्यापन/शोध का अवसर नहीं मिल पाता है। संगठन द्वारा सरकार की जानकारी में यह तथ्य भी लाया गया है कि सी.ए.एस. नियमों में बार-बार किए गए परिवर्तनों से उपजी समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए नवीन यू.जी.सी. वेतनमान हेतु जारी ड्राफ्ट रेगुलेशन में यू.जी.सी. ने ए.पी.आई. योजना को 11 जुलाई 2016 तक शिथिल करने का प्रावधान किया है। संगठन द्वारा बताया गया है कि विगत वर्षों में राजस्थान में शिक्षा के प्रसार के लिए सरकार द्वारा जो नए कॉलेज स्थापित किये गए हैं, उनमें से अधिकांश भवन एवं आवश्यक संसाधन रहित हैं तथा यू.जी.सी. के नियम 12बी के अन्तर्गत पंजीकृत भी नहीं है। कई महाविद्यालयों में परीक्षा केन्द्र भी नहीं हैं। ऐसी स्थिति में इन महाविद्यालयों के शिक्षकों को उनकी पदस्थापन अवधि के दौरान संबंधित श्रेणी में ए.पी.आई. अंकों से छूट देने की मांग संगठन द्वारा की गई है। संगठन इन तथ्यों के मद्देनजर शीघ्र सकारात्मक कार्यवाही करने की आशा करता है। संगठन ने इस संबंध में सरकार द्वारा अपेक्षित निर्णय लेने तक आवेदन तिथि बढ़ाने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि इस संबंध में सही स्पष्टीकरण जारी न होने के कारण संगठन के प्रयासों से पूर्व में आवेदन करने की तिथि 7 अप्रेल के स्थान पर 18 अप्रेल 2018 तक बढ़ाई गई थी।

4. **राज्य के विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों को यू.जी.सी. द्वारा अनुशंसित सातवें वेतनमान का लाभ शीघ्र दिया जाए** - संगठन ने मुख्यमंत्री व उच्च शिक्षा मंत्री से राज्य के विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों को शीघ्र नवीन यू.जी.सी. वेतनमान देने की मांग की है। संगठन ने सरकार के ध्यान में लाया है कि केन्द्र के सातवें वेतनमान के अनुरूप यू.जी.सी. के द्वारा गठित कमेटी की अनुशंसा पर निर्णय लेते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने पत्र क्रमांक 1-7/2015-U. 11(1) दिनांक 2 नवम्बर 2017 के द्वारा पुनरीक्षित नवीन वेतनमान का लाभ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के क्षेत्राधिकार के उच्च शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों को देने हेतु निर्देश जारी कर दिये हैं। इसी प्रकार यू.जी.सी. ने पत्र क्रमांक F No. 23-4/2017 (ps) दिनांक 31 जनवरी 2018 के द्वारा देश के सभी राज्यों में महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षकों के लिए यू.जी. सी. के नवीन वेतनमान को लागू करने के दिशा निर्देश जारी कर राज्य सरकारों से इसे तुरन्त प्रभाव से लागू करने की अपेक्षा की है। संगठन की मांग पर कार्यवाही प्रारम्भ करते हुए मुख्यमंत्री कार्यालय से इस संबंध में निर्देश जारी हुए हैं, जिसकी अनुपालना में वित्त विभाग द्वारा उच्च शिक्षा विभाग को वित्तीय भार गणना के लिए कहा गया है, फलस्वरूप आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा ने आदेश क्रमांक एफ1( )एच.आर.डी./आकाशि/18/4047 दिनांक 6-4-2018 द्वारा समस्त

राजकीय महाविद्यालयों के प्राचार्यों को यू.जी.सी. सातवें वेतन आयोग के अनुसार वेतन नियतन करने पर वित्तीय भार की गणना हेतु निर्देश जारी किए हैं।

5. **उच्च शिक्षा मंत्री व अन्य अधिकारीगणों से भेंटवार्ता** - संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने 27 मार्च 2018 को शासन सचिवालय में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण जी माहेश्वरी, आयुक्त कॉलेज शिक्षा श्री आशुतोष जी पेडणेकर, अतिरिक्त आयुक्त कॉलेज शिक्षा श्री आर पी शर्मा जी, संयुक्त सचिव शिक्षा ग्रुप-3 श्री मूलचंद जी व अन्य अधिकारियों के साथ शिक्षक समस्याओं के समाधान को लेकर विस्तृत बैठक की। लगभग डेढ घंटे तक चली बैठक में विभिन्न विषयों पर शिक्षकों का पक्ष संगठन द्वारा विस्तार से रखा गया । जून 2013 से लंबित पे बैंड 4 की प्रक्रिया को अविलंब प्रारंभ करने तथा 2015 के बाद पे बैंड 4 हेतु पात्र शिक्षकों से आवेदन माँगने की प्रक्रिया प्रारंभ करने की मांग को संगठन ने सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। उच्च शिक्षा मंत्री जी ने विषय की गंभीरता को देखते हुए इस संबंध में बिना देर किए हुए प्रक्रिया प्रारंभ करने हेतु निर्देश दिए। महाविद्यालयों में प्राचार्यों की कमी के कारण उत्पन्न प्रशासनिक व्यवस्था पर भी विस्तार से अपना पक्ष रखते हुए संगठन ने शीघ्र डीपीसी करवाने की मांग की। अधिकारियों द्वारा जानकारी दी गई कि नवीन नियमों से डीपीसी करवाने संबंधी प्रक्रिया का ड्राफ्ट अंतिम रुप से तैयार हो चुका है, इसे अप्रुव होते ही डीपीसी की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाएगी। राज्य की उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षकों के लिए नवीन यूजीसी वेतनमान लागू करने की मांग संगठन द्वारा पुरजोर रूप से उठाई गई। मंत्री जी ने बताया कि इस विषय में एमएचआरडी का पत्र उन्हें मिल चुका है तथा उसे आवश्यक कार्यवाही के लिए वित्त विभाग को भिजवा दिया गया है। महाविद्यालय में प्रोफ़ेसर के स्वीकृत पदों में नवीन पदों की संख्या को जोड़कर उन्हें भरने की मांग के संबंध में मंत्री जी ने बताया कि संगठन की मांग पर पूर्व स्वीकृत 477 पदों में नवीन स्नातकोत्तर विभागों के प्रोफेसर पद जोड़ते हुए विस्तृत पदोन्नति प्रक्रिया तैयार कर ली गई है । मंत्री जी ने इस संबंध में शीघ्र ही एक आवेदन प्रोफार्मा बनाकर शिक्षकों से आवेदन मांगने के निर्देश अधिकारियों को दिए। काफी समय से RVRES शिक्षकों के सीएएस को आयुक्तालय द्वारा लम्बित करने के मामले को संगठन द्वारा तथ्यों के साथ विस्तार से रखा गया। आयुक्त महोदय ने बताया कि वित्तीय भार की गणना के बाद अब इस फ़ाइल को वित्त विभाग में भेजने की तैयारी चल रही है। महाविद्यालयों में बड़ी संख्या में शिक्षकों के रिक्त पदों के कारण उत्पन्न समस्याओं को संगठन द्वारा विस्तार से रखा गया । लोक सेवा आयोग द्वारा धीमी चयन प्रक्रिया व चयन पश्चात नियुक्ति हेतु सूचियां समय पर न भेजने के कारण पूरे वर्ष विद्यार्थियों व शिक्षकों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा है । शिक्षकों को कार्यव्यवस्थार्थ लगाने से किसी भी पक्ष का भला नहीं होता है। मंत्री जी ने लोक सेवा आयोग से संबंधित समस्त आंकड़ों की जानकारी लेते हुए इस संबंध में मुख्य सचिव से वार्ता कर समुचित कार्यवाही करने का मंतव्य व्यक्त किया । उन्होंने अधिकारियों से वेतन माइनस पेंशन आधार पर सेवानिवृत्त शिक्षकों की सेवा लेने का प्रस्ताव अविलंब भिजवाने के भी निर्देश दिए। 23 फरवरी को आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा द्वारा जारी पदनाम परिवर्तन के आदेश को RVRES शिक्षकों के लिए भी माने जाने तथा शारीरिक शिक्षकों का पदनाम परिवर्तन शीघ्र करने की मांग संगठन द्वारा मंत्री महोदय के समक्ष रखी गई, जिस पर मंत्री जी ने अधिकारियों को उचित कार्यवाही करने के निर्देश प्रदान किए । बैठक में प्रयोगशाला सहायक व लिपिक पदों पर शीघ्र नियुक्ति देने, जनवरी 06 से जून 06 के मध्य वेतन वृद्धि वाले शिक्षकों को एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि देने, असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती हेतु गुड एकेडमिक रिकॉर्ड की परिभाषा ठीक करने, नवीन महाविद्यालयों में शिक्षकों के सृजित पदों सहित अन्य रिक्त पदों की अभ्यर्थना लोक सेवा आयोग को भेजने, शारीरिक शिक्षकों व पुस्तकालयाध्यक्षों की भर्ती करने, महाविद्यालयों में अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्र खोलने सहित अन्य विषयों को भी संगठन द्वारा प्रमुखता से रखा गया। प्रत्येक विषय पर अलग-अलग लिखित पत्रों को संगठन ने प्रस्तुत किया। मंत्री महोदय ने सभी विषयों को समझते हुए अधिकारियों को त्वरित गति से कार्य करने के निर्देश प्रदान किए। प्रतिनिधिमंडल में संगठन अध्यक्ष डॉ दिग्विजय सिंह, संगठन मंत्री डॉ ग्यारसी लाल जाट एवं महामंत्री शामिल रहे।

6. **असिस्टेंट प्रोफेसर के 830 पदों हेतु अभ्यर्थना प्रेषित** - राजकीय महाविद्यालयों में 830 असिस्टेंट प्रोफेसर पदों हेतु राज्य सरकार ने राजस्थान लोक सेवा आयोग को अभ्यर्थना भेज दी है। संगठन पिछले काफी समय से महाविद्यालयों में पद रिक्त होने के साथ ही उनकी भर्ती प्रक्रिया प्रारंभ करने की मांग करता रहा है । संगठन ने अधिकारियों व मंत्री जी के साथ हुई विभिन्न भेंटवार्ताओं और पत्रों में निरंतर इस विषय को उठाया था और दबाव बनाया था। संगठन की निरन्तर सक्रियता के एवं राज्य

सरकार के सकारात्मक रुख के चलते इस प्रकार के भविष्यलक्षी निर्णय लिए गए है, फलत: महाविद्यालयों को उचित समय पर अपेक्षित संख्या में शिक्षक मिलने की संभावना बनी है।

7. **विधानसभा में उच्च शिक्षा मंत्री जी द्वारा विभिन्न शिक्षक समस्याओं के संबंध में घोषणा** - संगठन द्वारा सरकार से निरंतर संपर्क, वार्ता और दबाव का परिणाम है कि विधानसभा में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी ने सातवें वेतन आयोग पर कार्यवाही प्रारंभ करने,महाविद्यालयों में प्रोफेसर एवं प्राचार्य के पद शीघ्र भरने, लैब असिस्टेंट व लिपिक के पदों पर शीघ्र नियुक्ति देने, शारीरिक शिक्षकों का पदनाम डायरेक्टर फिजिकल एजुकेशन करने तथा शिक्षक दिवस पर महाविद्यालय शिक्षकों को सम्मानित करने की घोषणा की है । शिक्षक समस्याओं के प्रति सकारात्मक रुख अपनाने के लिए संगठन उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी जी के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता है। इन घोषणाओं को शीघ्र मूर्त रूप प्रदान करवाने के लिए संगठन शासन प्रशासन पर दबाव बनाए हुए है।

8. **यू.जी.सी. के नवीन रेगुलेशन 2018 पर संगठन का पक्ष प्रस्तुत** - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति एवं कैरियर पदोन्नति हेतु नवीन रेगुलेशन 2018 का ड्राफ्ट जारी किया गया। इस ड्राफ्ट पर संबंधित पक्षों से सुझाव भी मांगे गए। ड्राफ्ट का प्राथमिक तौर पर निरीक्षण करने पर ध्यान में आता है कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के सामयिक एवं निरंतर शिक्षक हितों में किए गए प्रयासों का प्रतिफल एक सीमा तक ड्राफ्ट में नजर आया है। पदोन्नति हेतु छठे वेतन आयोग की अत्यंत विवादित योजना एपीआई-पीबीएएस की विदाई की गई है तथा पदोन्नति योजना को सरल बनाया गया है। महाविद्यालयों में प्रोफेसर पद हेतु कोटा समाप्त किया गया है । लंबित पदोन्नति प्रकरणों हेतु 11 जुलाई 2016 तक एपीआई से छूट दी गई है । स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य के लिए एक ही प्रोफेसर ग्रेड रखी गई है। एसोसिएट प्रोफेसर के लिए पीएचडी सुपरविजन की आवश्यकता को समाप्त किया गया है। एक रेगुलेशन से दूसरे रेगुलेशन में स्मूथ मूवमेंट के लिए शिक्षकों को पदोन्नति हेतु विद्यमान रेगुलेशन के चयन का विकल्प नवीन रेगुलेशन के नोटिफिकेशन से 2 वर्ष के भीतर तक दिया गया है। इंक्रीमेंट हेतु वर्ष में दो तिथियों 1 जनवरी तथा 1 जुलाई का विकल्प दिया गया है । पहली बार विश्वविद्यालयों एवं राज्य सरकारों के लिए नोटिफिकेशन लागू करने की समय सीमा तय की गई है।

संगठन के सक्रिय प्रयत्नों से कई विषयों पर नोटिफिकेशन में सकारात्मक कदम उठाए गए हैं, किंतु कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर ड्राफ्ट रेगुलेशन में अपेक्षित कार्यवाही नहीं की गई है। इस संबंध में रुक्टा (राष्ट्रीय) ने विस्तृत ज्ञापन यू.जी.सी. अध्यक्ष को भेजा है। ज्ञापन में मुख्य रूप से जिन विषयों को तथ्यों सहित विस्तार से प्रस्तुत किया गया है उनमें-राज्य द्वारा पोषित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को अतिरिक्त वित्तीय भार का न्यूनतम 80 प्रतिशत 5 वर्ष के लिए केन्द्र द्वारा वित्तीय सहयोग देने, महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में न्यूनतम ठहराव की अवधि सात घण्टे के स्थान पर पूर्ववत् पांच घण्टे करने तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों की गरिमा अनुरूप उचित आधारभूत ढांचे की व्यवस्था करने, एमफिल/पीएचडी डिग्री हेतु एंट्री लेवल पर व सेवा काल में प्रोत्साहन स्वरुप अग्रिम वेतन वृद्धियां जारी रखने, अध्यापन कार्यभार असिस्टेंट प्रोफेसर/एसोसिएट प्रोफेसर हेतु अधिकतम सोलह घण्टे तथा प्रोफेसर हेतु अधिकतम चौदह घण्टे करने, प्रत्येक ए.जी.पी. स्तर पर युक्तिकरण सूचकांक (इन्डेक्स ऑफ रेशनलाइजेशन) को न्यूनतम 2.72 करने, सी.ए.एस. प्रमोशन हेतु पीएच.डी. की अनिवार्यता को समाप्त कर प्रमोशन को समयबद्ध रूप से लागू करने, पीएच.डी./एम.फिल. डिग्री हेतु लिये गये अवकाश की अवधि को शोध/अध्यापन अनुभव में जोड़ने ,एसोसिएट प्रोफेसर हेतु सात के स्थान पर न्यूनतम पाँच तथा प्रोफेसर पद हेतु दस के स्थान पर न्यूनतम आठ प्रकाशन की पात्रता रखने, रिफ्रेशर व ओरिएंटेशन कोर्स हेतू छूट की अवधि 31 दिसम्बर 2018 तक बढाने, असिस्टेंट प्रोफेसर के पद हेतु साक्षात्कार के लिए अभ्यर्थियों की शॉर्ट लिस्टिंग करने के मानदंडों को व्यावहारिक बनाने, शोधपत्रों के प्रकाशन हेतु सभी संकायों में समान रूप से प्रति शोधपत्र दस अंक देने तथा सेमिनार/कॉन्फ्रेन्स में भाग लेने, लोकप्रिय लेख लिखने, जर्नल का सम्पादन करने आदि गतिविधियों के भी सी.ए.एस. योजना में अंक देने की व्यवस्था कर रेगुलशन को न्यायसंगत बनाने की मांग की गई है।

9. **प्राचार्य पद हेतु डी.पी.सी. के संबंध में कार्यवाही** - राजकीय महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं उपाचार्य पदों के लिए 2015-16 एवं 2016-17 की डी.पी.सी. 4 जुलाई 2016 को आयोजित की गई थी। संगठन के प्रयासों से न केवल उक्त डी.पी.सी. में पदोन्नत शिक्षकों को प्राचार्य एवं उपाचार्य पदों पर पदस्थापित किया गया, वरन् 2016-17 की द्वितीय सूची से भी गत 31 मार्च 2017 तक पदोन्नत शिक्षकों को प्राचार्य/उपाचार्य पद पर पदस्थापित किया गया। अप्रेल 2017 में ड्यू 2017-18 की प्राचार्य/

उपाचार्य पद की डी.पी.सी. समय पर करवाने हेतु संगठन निरन्तर प्रयासरत रहा, किन्तु ए.सी.आर. संबंधी कतिपय कमियों एवं बाद में पदनाम परिवर्तन के नियम बनने की प्रक्रिया में कार्मिक विभाग की आपत्ति के चलते डी.पी.सी. प्रक्रिया में विलम्ब हुआ है। संगठन द्वारा उच्च शिक्षामंत्रीजी के ध्यान में नियमित रूप से लाया गया है कि डी.पी.सी. नहीं होने के कारण राज्य के अधिकांश महाविद्यालयों में प्राचार्यों के पद रिक्त हो गये हैं। इस कारण महाविद्यालयों के सामान्य प्रशासनिक कार्यों में अत्यन्त परेशानी हो रही है। इस बीच अधिकारियों ने प्राचार्य पद हेतु ए.पी.आई. व्यवस्था नियमों में लाने का पुन: प्रस्ताव किया, संगठन को पता चलते ही मंत्रीजी के समक्ष इस संबंध में कड़ी आपत्ति जताते हुए इस प्रस्ताव को वापिस लेने की मांग की गई। संगठन के तर्कों से सहमत होते हुए मंत्रीजी ने ए.सी.आर. व वरिष्ठता के आधार पर नियम बनाकर पीएच.डी. धारक पात्र शिक्षकों की डी.पी.सी. करवाने के निर्देश जारी किए। संगठन को प्राप्त जानकारी के अनुसार ए.पी.आई. की बाध्यता हटाते हुए डी.पी.सी. के नवीन नियम विभाग द्वारा बनाकर कार्मिक विभाग को भेजे जा चुके हैं। नियम संबंधी औपचारिकताएं पूर्ण होते ही डी.पी.सी. करवाने हेतु संगठन जागरुक एवं प्रयत्नरत है।

10. **नवीन खोले गए स्नातकोत्तर विभागों को शामिल करते हुए प्रोफेसर पदों को भरे जाने की मांग** – संगठन के अथक् प्रयासों से महाविद्यालय शिक्षकों की वर्षों से लम्बित पदनाम परिवर्तन की मांग को न केवल मूर्त रूप मिल सका वरन् पहली बार राज्य के राजकीय महाविद्यालयों में प्रोफेसर के 477 पद भी सृजित किये गये हैं। संगठन द्वारा सरकार के समक्ष यह विषय रखा गया कि हाल ही में सरकार ने कुछ नवीन स्नातकोत्तर विभाग खोले हैं तथा कुछ स्नातक विभागों को स्नातकोत्तर में क्रमोन्नत किया है, अत: उन विभागों में भी प्रोफेसर के पद स्वीकृत किए जाए। संगठन की मांग से सहमत होते हुए मंत्रीजी ने अधिकारियों को पदों की संख्या वृद्धि करने के संबंध में निर्देश दिए। संगठन ने यह भी मांग की है कि प्रोफेसर पद हेतु शीघ्रताशीघ्र निष्पक्ष एवं पारदर्शी चयन प्रक्रिया अपनाते हुए योग्य शिक्षकों द्वारा प्रोफेसर पदों को भरा जाए, जिससे शिक्षकों को उनका न्यायोचित अधिकार समय पर मिल सके। इस संबंध में भी मंत्रीजी के निर्देशों के बाद अपेक्षित कार्यवाही प्रारम्भ हुई है।

11. **शैक्षिक महासंघ के प्रतिनिधिमंडल की यू.जी.सी. अध्यक्ष व सचिव से भेंट** – अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के प्रतिनिधि मंडल ने 5 फरवरी 2018 को दिल्ली में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रोफेसर डी पी सिंह से शिक्षकों की यूजीसी से संबंधित विभिन्न समस्याओं को लेकर लंबी भेंट की। लगभग 1 घंटे तक चली भेंटवार्ता के मुद्दों में सेवारत शिक्षकों को पीएचडी कोर्स वर्क से मुक्त करने,रिफ्रेशर व ओरिएंटेशन कोर्स की छूट अवधि 31 दिसंबर 2018 तक बढ़ाने, पीएचडी एवं एमफिल की प्रोत्साहन स्वरूप वेतन वृद्धियों को पुन: प्रारंभ करने, स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य को एक ही कॉडर में 10000 एजीपी में रखने, नवीन यूजीसी वेतनमान को संपूर्ण देश में एक समान रूप से लागू करने तथा राज्य सरकारों को 5 वर्ष तक अतिरिक्त भार का 80 प्रतिशत अनुदान देने, एसोसिएट प्रोफेसर पर चयन हेतु पीएचडी सुपरविजन की बाध्यता को समाप्त करने, छठे वेतन आयोग की विसंगतियों को दूर करने, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के चयन हेतु योग्यता को एक समान रखने, कैरियर एडवांसमेंट स्कीम में पूर्व सेवा का लाभ प्रदान करने सहित अन्य विषय शामिल थे। प्रो. डी. पी. सिंह ने एक-एक विषय को ध्यानपूर्वक समझा तथा इन विषयों से संबंधित यूजीसी के पक्ष की सकारात्मक कार्यवाही करने का विश्वास दिलाया।

प्रतिनिधि मंडल ने पुन: 14 मार्च 2018 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. डी. पी. सिंह, आयोग के सचिव प्रो रजनीश जैन एवं संयुक्त सचिव श्रीमती अर्चना ठाकुर से नवीन यू.जी.सी. ड्राफ्ट रेगुलेशन की विसंगतियों के संबंध में विस्तृत भेंटवार्ता की। संगठन द्वारा पूर्व में प्रस्तुत ज्ञापनों एवं सुझावों के अनुरूप स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य दोनों को एक समान प्रोफेसर ग्रेड में रखने, लम्बित सी.ए.एस. मामलों में ए.पी.आई. में छूट देने, विश्वविद्यालयों में वरिष्ठ प्रोफेसर के पद सृजित करने तथा महाविद्यालयों में प्रोफेसर पद की संख्या की सीमा समाप्त करने हेतु यू.जी.सी. अध्यक्ष को धन्यवाद दिया गया। संगठन द्वारा नवीन यू.जी.सी. ड्राफ्ट रेग्यूलेशन के संबंध में तथ्यों, तर्कों तथा दस्तावेजों सहित सुझाव देते हुए व्यापक रूप से शिक्षक एवं शिक्षा हित में संशोधन की मांग की गई। प्रतिनिधिमंडल द्वारा राज्य द्वारा पोषित विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को अतिरिक्त वित्तीय भार का न्यूनतम 80 प्रतिशत 5 वर्ष के लिए केन्द्र द्वारा वित्तीय सहयोग देने तथा यू.जी.सी. रेगुलेशन को एक समान रूप से देशभर में लागू करने, महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में न्यूनतम ठहराव की अवधि सात घण्टे के स्थान पर पूर्ववत् पांच घण्टे करने तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों की गरिमा अनुरूप उचित आधारभूत ढांचे की व्यवस्था करने, एमफिल/पीएचडी डिग्री हेतु एंट्री लेवल पर व सेवा काल में प्रोत्साहन स्वरुप अग्रिम वेतन वृद्धियां जारी रखने, अध्यापन

कार्यभार असिस्टेंट प्रोफेसर/एसोसिएट प्रोफेसर हेतु अधिकतम सोलह घण्टे तथा प्रोफेसर हेतु अधिकतम चौदह घण्टे करने, उच्च शिक्षा में प्रतिभाओं को आकर्षित करने हेतु एन्ट्री लेवल पर बेहतर वेतन देने तथा प्रत्येक ए.जी.पी. स्तर पर युक्तिकरण सूचकांक (इन्डेक्स ऑफ रेशनलाइजेशन) को न्यूनतम 2.72 करने की मांग की गई। महासंघ को देश भर के शिक्षकों से मिले फीडबैक की जानकारी यूजीसी अध्यक्ष व सचिव को देते हुए सी.ए.एस. प्रमोशन हेतु पीएच.डी. की अनिवार्यता को समाप्त कर प्रमोशन को समयबद्ध रूप से लागू करने तथा पीएच.डी. की अनिवार्यता विश्वविद्यालयों में एसोसिएट प्रोफेसर व प्रोफेसर की सीधी नियुक्ति हेतु ही रखा जाने, पीएच.डी./एम.फिल. डिग्री हेतु लिये गये अवकाश की अवधि को शोध/अध्यापन अनुभव में जोड़ने ,एसोसिएट प्रोफेसर हेतु सात के स्थान पर न्यूनतम पाँच तथा प्रोफेसर पद हेतु दस के स्थान पर न्यूनतम आठ प्रकाशन की पात्रता रखने, महाविद्यालय प्राचार्य का एक बार विधिवत् प्रक्रिया द्वारा चयन होने पर पुन: एक ओर टर्म पीअर रिव्यू के ही आधार पर बढ़ाने, रिफ्रेशर व ओरिएंटेशन कोर्स हेतू छूट की अवधि 31 दिसम्बर 2018 तक बढाने, छठे वेतन आयोग की विसंगतियों को दूर करने, शोधपत्रों के प्रकाशन हेतु सभी संकायों में समान रूप से प्रति शोधपत्र दस अंक देने तथा सेमिनार/कॉन्फ्रेन्स में भाग लेने, लोकप्रिय लेख लिखने, जर्नल का सम्पादन करने आदि गतिविधियों के भी सी.ए.एस. योजना में अंक देने की व्यवस्था कर रेगुलशन को न्यायसंगत बनाने की मांग की। महासंघ द्वारा यूजीसी के ध्यान में लाया गया कि कई विश्वविद्यालयों ने पीएच.डी. हेतु यू.जी.सी. रेगुलेशन 2009 को बाद में लागू किया है, अत: ऐसे विश्वविद्यालयों में रेगुलेशन को अपनाने की तिथि से पूर्व पंजीकृत अभ्यर्थियों को नेट से छूट दी जाए. इसके साथ ही असिस्टेंट प्रोफेसर के पद हेतु साक्षात्कार के लिए अभ्यर्थियों की शॉर्ट लिस्टिंग करने के मानदंडों को व्यावहारिक बनाने, अन्य अकादमिक स्टॉफ यथा पुस्तकालयाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षक, शोध वैज्ञानिक आदि की सेवा शर्तें, सेवानिवृत्ति आयु व वेतन ढाँचा शिक्षकों के समान ही करने जैसे विषयों पर भी प्रमुखता से चर्चा की गई। यू.जी.सी. अध्यक्ष, सचिव व सहसचिव ने एक-एक करके प्रत्येक विषय को विस्तार से समझा तथा इन सुझावों पर शीघ्र संगठन की भावनानुरूप निर्णय लेने का मंतव्य व्यक्त किया। महासंघ के प्रतिनिधि मंडल में अध्यक्ष प्रो. जे. पी. सिंघल के साथ संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर, महामंत्री श्री शिवानंद सिन्दनकेरा, उच्च शिक्षा संवर्ग प्रभारी श्री महेन्द्र कुमार, उच्च शिक्षा संवर्ग सचिव प्रो. मनोज सिन्हा तथा सहसचिव डॉ. नारायण लाल गुप्ता शामिल थे।

12. **महाविद्यालय शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया शीघ्र सम्पन्न करवाने की मांग** - संगठन ने पिछले 2 वर्ष से लंबित भर्ती प्रक्रिया को शीघ्र संपन्न करने की मांग निरंतर उठाई है। इस संबंध में संगठन के पत्र के अनुसार मुख्य सचिव स्तर पर अधिकारियों की मीटिंग हो चुकी है और असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर चयनित अभ्यर्थियों को शीघ्र नियुक्ति दिए जाने पर लोक सेवा आयोग से सार्थक संवाद स्थापित हुआ है। कुछ कानूनी मसले हैं, जिनके समाधान हेतु सरकार व आयोग के स्तर पर प्रयास चले हैं। जिन विषयों में साक्षात्कार हो गए हैं उन्हें नियुक्ति दिलवाने और अन्य विषयों में साक्षात्कार आयोजित करवाने के लिए संगठन सरकार व लोकसेवा आयोग के निरंतर संपर्क में है एवं दबाव बनाए हुए हैं।

13. **कनिष्ठ सहायकों व प्रयोगशाला सहायकों की नियुक्ति के प्रयास** - राजकीय महाविद्यालयों में अशैक्षणिक स्टॉफ की कमी की समस्या को संगठन ने नियमित रूप से सरकार के समक्ष उठाया है तथा पदों को भरने की मांग की है। संगठन के निरन्तर प्रयत्नों के चलते कनिष्ठ सहायकों एवं प्रयोगशाला सहायकों हेतु कॉउसलिंग हुई है तथा आदेश क्रमांक एफ1(04)पीएस/निकाशि/2018/1225 दिनांक 4-4-2018 द्वारा 25 कनिष्ठ सहायकों की नियुक्ति कर दी गई है। संगठन प्रयोगशाला सहायकों एवं शेष रहे कनिष्ठ सहायकों की शीघ्र नियुक्ति हेतु प्रयासरत है। संगठन ने सरकार से मांग की है कि नवीन कार्यभार के अनुरूप सभी श्रेणी के मंत्रालयिक कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया सम्पन्न कर नियुक्ति प्रदान की जाए।

14. **गुड एकेडमिक रिकार्ड को यू.जी.सी. मानदंड से अधिक नहीं रखने की मांग** - पिछली भेंटवार्ताओं में एवं पत्रों के माध्यम से संगठन ने उच्च शिक्षा मंत्री जी के समक्ष असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर भर्ती हेतु गुड एकेडमिक रिकॉर्ड को यू.जी.सी. मानदंडों से अधिक नहीं रखने की मांग की थी, इस पर सिद्धांतत: सहमति बनी है तथा इस विषय को लेकर फाईल चली है । संगठन को आशा है कि राज्य सरकार इस संबंध में शीघ्र सकारात्मक कार्यवाही करेगी। उल्लेखनीय है कि पिछली भर्ती के समय पर भी संगठन ने सरकार के समक्ष यह विषय उठाया था, किन्तु अधिकारियों की जिद के चलते इस विषय में सकारात्मक निर्णय नहीं लिया जा सका था।

15. **सुखाड़िया विश्वविद्यालय परीक्षा में आन्तरिक फ्लाईंग रखने एवं विज्ञान स्नातक में स्वयंपाठी विद्यार्थियों को प्रवेश देने के संबंध में** – संगठन ने मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति को पत्र लिख कर विश्वविद्यालय परीक्षा में आंतरिक फ्लाईंग रखने तथा विज्ञान स्नातक में स्वयंपाठी छात्रों को प्रवेश देने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि सुखाड़िया विश्वविद्यालय परीक्षा में आन्तरिक फ्लाईंग का प्रावधान खत्म कर दिया गया है। विश्वविद्यालय परीक्षा में आन्तरिक फ्लाईंग द्वारा परीक्षा केन्द्र में प्रवेश के समय विद्यार्थियों की जाँच एवं परीक्षा अवधि में पुन: जाँच करने से न केवल नकल रुकती है वरन् परीक्षा केन्द्र पर अनुशासन भी बना रहता है। संगठन ने कुलपति जी को बताया है कि मात्र कुछ धनराशि की बचत करने के लिए आन्तरिक फ्लाईंग के प्रावधान को समाप्त करना न्यायसंगत नहीं है। संगठन ने विश्वविद्यालय प्रशासन के ध्यान में यह तथ्य लाया है कि स्नातक विज्ञान प्रथम वर्ष में प्रवेशित विद्यार्थियों में से अनेक विद्यार्थी प्रथम वर्ष पश्चात् इंजीनियरिंग, मेडीकल, नर्सिंग आदि प्रोफेशनल कोर्सेज में प्रवेश ले लेते हैं जिससे प्रथम वर्ष की अपेक्षा द्वितीय वर्ष में विद्यार्थियों की संख्या काफी कम हो जाती है। प्रथम वर्ष में प्रवेश वरीयता प्रतिशत उच्च रहने अथवा अन्य कारणों से वंचित अनेक विद्यार्थी स्नातक प्रथम वर्ष स्वयंपाठी के रूप में देकर द्वितीय वर्ष में नियमित प्रवेश लेते हैं। ऐसी स्थिति में कुलपति महोदय से विज्ञान स्नातक में स्वयंपाठी के रूप में विद्यार्थियों को प्रवेश देकर ऐसे विद्यार्थियों के हितों का संरक्षण करने की माँग की गई है।

16. **बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर में प्रतिनियुक्त शिक्षकों की ए.सी.आर. अग्रेषण हेतु कार्यवाही** – आयुक्तालय के आदेशानुसार महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर में वर्तमान/पूर्व में प्रतिनियुक्त कुछ शिक्षकों द्वारा कुलपति महोदय को प्रस्तुत (एसीआर) एपीएआर को कई माह बीत जाने के बाद भी अग्रेषित नहीं किए जाने पर एवं कुलपति महोदय का व्यवहार सम्यक नहीं होने पर संगठन ने उच्च शिक्षा मंत्री जी से पत्र लिखकर समुचित कार्यवाही की मांग की। इस कार्यवाही के पश्चात् संगठन को ज्ञात हुआ है कि अंतत: इन शिक्षकों की ए.सी.आर. आयुक्तालय को अग्रेषित कर दी गई है।

सांगठनिक एवं वैचारिक गतिविधियाँ

1. **कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम सम्पन्न** – संगठन की विभिन्न इकाईयों ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की योजनानुसार वर्ष पर्यन्त स्थायी कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 12 जनवरी से 23 जनवरी (स्वामी विवेकानंद जयंती से नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती) के मध्य इकाई स्तर पर ''कर्त्तव्य बोध दिवस'' मनाया, जिसमें समाज के मूर्धन्य विद्वानों, संतों एवं वरिष्ठ शिक्षाविदों द्वारा दायित्व बोध हेतु प्रभावी व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

   राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, **उदयपुर** में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में प्रदेश संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों, महाविद्यालय व समाज-राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को ठीक प्रकार से समझने और निर्वहन का पाथेय प्रदान किया। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **श्रीगंगानगर** में मूक-बधिर व अंध विद्यालय के संस्थापक स्वामी ब्रह्मदेव जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जैसे हमारे विचार होंगे, वैसे कर्म बनेंगे और वैसा ही समाज विनिर्मित होगा। अत: हमारे विचारों में शुद्धता व कर्मों में निर्लिप्तता रखनी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार मोदी ने की, विषय प्रवर्तन विभाग सहसचिव डॉ. श्यामलाल ने तथा संचालन डॉ. मधु वर्मा ने किया। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **सवाईमाधोपुर** में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक श्री पवन ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवकों का प्रमुख योगदान होता है। प्राध्यापक युवाओं के निर्माण में महत्ती भूमिका निभाते हैं, अत: उन्हें अपने स्वयं के प्रति, विषय के प्रति, अपने विद्यार्थियों के प्रति और अंत में समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्राचार्य प्रो. हरलालसिंह ने जीवन को कर्म प्रधान बताते हुए कहा कि अपने कर्त्तव्य का पालन न करना किसी अन्य के अधिकार का हनन करना है। संचालन इकाई सचिव डॉ. राजेश गुप्ता ने किया। **जयपुर** में आयुक्तालय, संगीत संस्थान व स्कूल ऑफ आर्ट्स के संयुक्त कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन करते हुए सह-संगठन मंत्री डॉ. दीपक शर्मा ने कहा कि गुरु विद्यार्थियों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला माध्यम होता है। कर्त्तव्य पालन से संतुष्टि का भाव पैदा होता है और यही राष्ट्र को परम वैभव की ओर ले जाने का मार्ग है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के महामंत्री श्री जे. पी. सिंघल ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए शिक्षकों का आह्वान किया कि वे सिर्फ विषय सामग्री तक सीमित न रह कर, पूरे समाज के शिक्षक बनें। शिक्षकों को अपने आचरण में कथनी व करनी का भेद समाप्त कर अपने कृतित्व से समाज का प्रेरणा पुंज बनने का प्रयास करना चाहिए। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में संयुक्त

निदेशक डॉ. वंदना चक्रवर्ती ने शिक्षा के साथ-साथ नैतिक आचरण पर भी बल देने की महती आवश्यकता जताई। डॉ. वसुधा ने आभार व्यक्त किया तथा संचालन डॉ. अरुण रघुवंशी ने किया।

सिरोही के गुरुकुलम संस्थान में एस.पी. राजकीय महाविद्यालय व राजकीय कन्या महाविद्यालय के संयुक्त कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री नन्दलाल 'बाबाजी' ने अपने पाथेय में कहा कि एक चरित्रवान शिक्षक ही चरित्रवान राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। रामायण व महाभारत के अनेक दृष्टान्तों का वर्णन करते हुए श्री नंदलालजी ने कहा कि दायित्ववान गुरु अपने शिष्य को निराशा से सफलता की ओर अग्रेषित कर देता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. के. के. शर्मा ने की। पाली विभाग महिला प्रतिनिधि प्रो. कुसुम राठौड़ ने कहा कि रुक्टा (राष्ट्रीय) कर्त्तव्यबोध जैसे नैतिक कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित करता है। राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, **झालावाड़** में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. हमीद अहमद ने कहा कि हमें अपने कर्त्तव्यों का बोध मात्र न हो, वरन् हमारे आचरण में कर्त्तव्य की निष्पत्ति हो। श्री मद्भगवद्गीता का उदाहरण देते हुए उन्होंने सदैव कर्मशील बने रहने का उद्बोधन दिया। विभाग सचिव डॉ. गजेन्द्र मालवीय ने निस्वार्थ भाव से कर्म करने का आह्वान किया। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. बी.एल. बैरवा ने की तथा डॉ. रामकल्याण मीणा ने आभार व्यक्त किया। **अलवर** के गौरीदेवी कन्या राजकीय महाविद्यालय में मुख्यवक्ता प्रदेश संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर रहे। प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. ऋतु गुप्ता, डॉ. बुद्धिमती यादव व डॉ. भवनाथ पाण्डे ने भी अपने विचार रखे। राजकीय महाविद्यालय, **जोधपुर** में आयोजित कर्त्तव्यबोध दिवस कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए विद्या भारती के पूर्व प्रांत प्रमुख श्री वासुदेव जी प्रजापति ने कहा कि किसी भी संगठन द्वारा अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु आवाज उठाना तो सहज है किन्तु अपने दायित्वों के स्मरण हेतु इकाई स्तर पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करना श्लाघ्य है। शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों में संस्कार व कर्त्तव्यबोध के भाव जाग्रत कर श्रेष्ठ भारत निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए। अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. कैलाश स्वरूप शर्मा ने की। आभार डॉ. ओ.पी. देवासी ने व्यक्त किया तथा संचालन डॉ. रिछपालसिंह ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **प्रतापगढ़** में मुख्यवक्ता संगठन मंत्री डॉ. ग्यारसीलाल जाट एवं विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला प्रचारक श्री मनोज प्रताप रहे। अध्यक्षता नवीन कुमार झा ने की तथा संचालन डॉ. बनवारीलाल मीणा ने किया। श्री गोविन्द गुरु राजकीय महाविद्यालय, **बांसवाड़ा** में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. ग्यारसीलाल जाट ने कहा कि निज कर्त्तव्य का पालन करने से व्यक्तित्व में दृढ़ता आती है तथा आपका जीवन समाज में अनुकरणीय बनता है। डॉ. जाट ने **डूंगरपुर** के राजकीय महाविद्यालय व वीरबाला कालीबाई कन्या महाविद्यालय में भी मुख्यवक्ता के रूप में कर्त्तव्याभिमुख जीवन जीने का आह्वान किया। डूंगरपुर में संचालन डॉ. गणेश निनामा एवं आभार डॉ. विवेक मण्डोत ने अभिव्यक्त किया।

राजकीय महाविद्यालय, **सरदारशहर** में आयोजित कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन विभाग सचिव डॉ. देवीशंकर शर्मा ने किया। मुख्यवक्ता जयपुर संभाग के संगठन मंत्री डॉ. सुरेन्द्र डी. सोनी ने कर्त्तव्यों का सजगता से निर्वहन करने का उद्बोधन दिया। अध्यक्षता प्राचार्या प्रो. पुष्पा बड़थ्वाल ने की। संचालन प्रो. सोहनलाल ने किया तथा अंत में धन्यवाद इकाई सचिव डॉ. कविता शर्मा ने ज्ञापित किया। **खेतड़ी** में राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. गिरधारी लाल सैनी की अध्यक्षता में कर्त्तव्यबोध दिवस आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अवतार कृष्ण शर्मा ने व आभार प्रदर्शन डॉ. सीताराम भार्गव ने किया। राजकीय कला महाविद्यालय, **सीकर** में मुख्य अतिथि डॉ. आर. जी. शर्मा रहे। डॉ. भागीरथ चिरानिया, डॉ. जगदीश बाजिया, प्रो. पुष्पा चौधरी व डॉ. मधु शर्मा ने इस अवसर पर अपने विचार रखे। संचालन इकाई सचिव डॉ. नरेन्द्र कुमार ने किया। राजकीय बांगड़ एवं राजकीय महिला महाविद्यालय, **पाली** के संयुक्त कार्यक्रम में मुख्यवक्ता भारत विकास परिषद् के मध्य क्षेत्र के राष्ट्रीय मंत्री श्री दुर्गादत्त शर्मा रहे। उन्होंने कर्त्तव्य बोध को 'अन्तर्निहित क्षमताओं के अधिकतम विकास' का साधन बताया तथा अपने कर्त्तव्य पालन हेतु सदैव सजग व संवेदनशील रहने का मंत्र दिया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. रामकेश मीणा व डॉ. वी.डी. दवे के अलावा विभाग सचिव डॉ. अनुपम चतुर्वेदी ने भी विचार रखे। राजकीय महाविद्यालय, **भोपालगढ़** में मुख्य वक्ता के रूप में देवरी धाम के महंत श्री रामदासजी शास्त्री एवं समाज सेवी श्री पुरुषोत्तम जी पारीक रहे। प्राचार्य मलकियत सिंह ढ़ोट ने अध्यक्षता की। इकाई सचिव डॉ. रामेश्वरलाल जमेरिया ने आभार प्रकट किया तथा संचालन डॉ. अर्जुन यादव ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **ओसियाँ** में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. साधना छंगाणी व संभाग संगठन मंत्री डॉ. हरिसिंह राजपुरोहित ने उद्बोधन दिया। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. विजयसिंह मीणा ने की। इसी प्रकार राजकीय महाविद्यालय, **बिलाड़ा** में आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य हेमराज मीणा तथा डॉ. ईश्वरचंद शर्मा ने व्याख्यान दिया।

बी.बी.डी. राजकीय महाविद्यालय एवं राजकीय कला महाविद्यालय, **चिमनपुरा** के संयुक्त कार्यक्रम में मुख्यवक्ता डॉ. नाथूलाल सुमन, पूर्व संयुक्त सचिव, कॉलेज शिक्षा रहे। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **शाहपुरा** में मुख्यवक्ता डॉ. सुभाष गुप्ता (सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक, कॉलेज शिक्षा) रहे। प्राचार्या डॉ. अनामिका सिंह ने अध्यक्षता की तथा संचालन इकाई सचिव डॉ. गीता गर्ग ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **सांभरलेक** में योगी श्री रमणनाथजी महाराज का 'कर्त्तव्य बोध' पर पाथेय प्राप्त हुआ। एम.एस.जे. राजकीय महाविद्यालय, **भरतपुर** में मुख्यवक्ता प्रो. रामसिंह वर्मा रहे। विषय प्रवर्तन डॉ. योगेन्द्र भानु ने किया। अध्यक्षता उपाचार्य डॉ. लता शर्मा ने की। राजकीय महाविद्यालय, **अनूपगढ़** में मुख्यवक्ता संगठन उपाध्यक्ष प्रो. एस. एन. शर्मा रहे। संचालन इकाई सचिव प्रो. महबूब खान मुगल ने किया। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **बून्दी** में प्राचार्य डॉ. पी. के. सलोदिया की अध्यक्षता में 'कर्त्तव्य बोध दिवस' का आयोजन किया गया, जिसमें उपाचार्य प्रो. जे. के. जैन ने भी विचार अभिव्यक्त किये। संचालन इकाई सहसचिव प्रो. आर.पी. गुप्ता ने तथा इकाई सचिव डॉ. डी.पी. त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **अजमेर** में पूर्व प्राचार्या डॉ. चित्रा अरोड़ा मुख्यवक्ता रही, अध्यक्षता डॉ. अरविन्द कश्यप ने की एवं संचालन इकाई सचिव डॉ. एस. के. जैन ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **केकड़ी** में मुख्यवक्ता शैक्षिक महासंघ के क्षेत्र प्रमुख श्री बजरंग प्रसाद मजेजी एवं विशिष्ट अतिथि श्री राधश्याम कुमावत रहे। अध्यक्षता प्रो. स्वाति नलवाया ने की तथा संचालन इकाई सचिव प्रो. पवन चंचल ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **धौलपुर** में मुख्यवक्ता पूर्व प्राचार्य प्रो. बी. एल. शर्मा, अध्यक्ष प्रो. डी. के. बंसल रहे। संचालन डॉ. जी. एस. मीणा ने किया। राजकीय एम.एस. कन्या महाविद्यालय, **बीकानेर** में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए शिक्षाविद् श्री जानकीनारायण श्रीमाली ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हमें अपनी धरोहर रूपी इतिहास व संस्कृति के कर्त्तव्य पक्ष को सीखना चाहिए और जीवन में कर्त्तव्याभिमुख रह कर जीना चाहिए, तभी श्रेष्ठ समाज व राष्ट्र विकसित होगा। संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने कर्त्तव्य पालन में निरन्तर क्षीणता पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि गुरु अपनी भावी पीढ़ी को जीवन दृष्टि दे, श्रेष्ठता की उड़ान दे, लक्ष्य का मार्गदर्शन दे तथा अहंकार से निवृत्ति दिलाने के भाव पोषित करे। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उमाकांत गुप्ता ने की तथा संचालन इकाई सचिव डॉ. संजु श्रीमाली ने किया।

श्री गोविन्दसिंह गुर्जर राजकीय महाविद्यालय, **नसीराबाद** में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए महामंत्री ने कहा कि रुक्टा (राष्ट्रीय) सिर्फ अपने अधिकारों की बात नहीं, वरन् कर्त्तव्य चिंतन पर ऐसे कार्यक्रम प्रतिवर्ष आयोजित करता है। इस भौतिकवादी युग में, जहाँ अपनी-अपनी मांगों का बोलबाला है, वहाँ हमारी सनातन संस्कृति के शाश्वत जीवन मूल्यों पर चिंतन करते हैं तो पाते हैं कि वास्तविक संतुष्टि तो कर्माभिमुख रहकर कर्त्तव्यपूर्ति में ही है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अतुल अग्रवाल व अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. आर. के. जैन ने की। सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, **अजमेर** में मुख्यवक्ता के रूप में बोलतेहुए 'मोटीवेशनल गुरु' वेद माथुर ने विभिन्न दृष्टान्तों के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में नवाचारों के प्रयोग करने पर बल दिया। वरिष्ठ पत्रकार श्री एस. पी. मित्तल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वही व्यक्ति अपनी अलग पहचान बना पाता है जो अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहता है। अध्यक्षता डॉ. हासो दादलानी ने की तथा संचालन डॉ. अनूप आत्रेय ने किया। **कोटा** महानगर के सभी राजकीय महाविद्यालयों के संयुक्त कार्यक्रम में मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चित्तौड़ प्रांत प्रचारक श्री विजयानंद जी ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस व डॉ. हेडगेवार के राष्ट्र निर्माण के ध्येयपूर्ण जीवन की विवेचना करते हुए उनके जीवन को कर्त्तव्य बोध का जीवन्त उदाहरण बताया। स्वामी विवेकानंद जैसी ऋषितुल्य साधना द्वारा युवकों के चरित्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका निर्वहन का आह्वान किया। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था की तरह आज सर्वांगीण विकास पर बल देते हुए उन्होंने शिक्षकों से शिक्षा को प्रासंगिक बनाने में अपनी भूमिका निभाने की बात कही। अध्यक्षीय उद्‌बोधन विभाग अध्यक्ष डॉ. विजय पंचौली ने दिया। विषय प्रवर्तन प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ. गीताराम शर्मा ने किया। संचालन डॉ. आदित्य गुप्ता व आभार डॉ. एम. जेड. ए. खान ने व्यक्त किया। **दौसा** स्थित सभी राजकीय महाविद्यालयों के संयुक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रुक्टा (राष्ट्रीय) के पूर्व अध्यक्ष व शैक्षिक मंथन के प्रधान संपादक प्रो. संतोष जी पाण्डेय ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यद्यपि कर्त्तव्य का भान तो सभी शिक्षकों को रहता है किन्तु यह आयोजन उसे चिंतन और दृढ़ता देने का अवसर प्रदान करता है। महासंघ के आह्वान पर देशभर के लाखों शिक्षक इस पखवाड़े में अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का चिंतन करते हैं। यह महासंघ का वैचारिक धरातल है, जो शिक्षा, शिक्षक और समाज उन्नयन हेतु प्रतिबद्ध है। विषय प्रवर्तन विभाग सचिव डॉ. शिवशरण कौशिक ने किया। राजकीय कला महाविद्यालय के प्राचार्य

डॉ. प्रेमसिंह व पं. नवलकिशोर शर्मा राजकीय महाविद्याल के प्राचार्य डॉ. अशोक शर्मा ने भी विचार रखे। विभाग अध्यक्ष डॉ. के. बी. बंसल ने आभार व्यक्त किया। संचालन स्थानीय इकाई सचिव डॉ. सी. पी. महेन्द्रा ने किया।

अलवर में राजर्षि, राजकीय कला व वाणिज्य महाविद्यालय के संयुक्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. एन. एल. शर्मा ने गुरु शिष्य संबंधों की व्याख्या करते हुए शिक्षकों से अपने कर्त्तव्य पालन का आह्वान किया। विषय प्रवर्तन प्रदेश संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने किया। अध्यक्षता डॉ. अनूप श्रीवास्तव ने की तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. पी.एम. शर्मा व डॉ. आर. सी. खण्डूरी रहे। आभार महेन्द्रसिंह जाट ने व्यक्त किया तथा संचालन राजर्षि महाविद्यालय के इकाई सचिव डॉ. राजेश गुप्ता ने किया। डूंगर महाविद्यालय, **बीकानेर** में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए सुबोध गिरीजी महाराज ने कहा कि यदि कर्त्तव्य बोध जागृत करना है तो अध्यात्म बोध जगाना होगा। महाराज ने उपस्थित शिक्षकों से समाज व राष्ट्र के निर्माण में सक्रिय योगदान का आह्वान किया। संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह ने अधिकारों की सजगता के साथ-साथ कर्त्तव्यों का निर्वहन भी पूरी सजगता से करने का पाथेय प्रदान किया। इकाई सचिव डॉ. उज्ज्वल गोस्वामी ने विषय प्रवर्तन किया। कार्यक्रम के आरंभ में बोधगीत डॉ. मूलचन्द माली ने प्रस्तुत किया, संचालन डॉ. एम. डी. शर्मा ने किया व आभार डॉ. शिशिर शर्मा ने अभिव्यक्त किया। राजकीय महाविद्यालय, **कपासन** में मुख्यवक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चित्तौड़ जिला कार्यवाह श्री दिनेश भट्ट रहे। श्री भट्ट ने शिक्षकों की कर्त्तव्य बोध दिवस के रूप में शुरु की गई इस पहल को समाज के लिए लाभदायक बताया। विषय प्रवर्तन इकाई सचिव प्रो. महेश तिवारी ने किया। विभाग सह-सचिव डॉ. सरोज कुमार ने भी विचार व्यक्त किये। लोहिया महाविद्यालय, **चूरू** में कर्त्तव्य बोध दिवस के अवसर पर एक अभिनव प्रयोग के रूप में जयपुर संभाग संगठन मंत्री डॉ. एस. डी. सोनी द्वारा विषय प्रवर्तन करने के पश्चात् संत विनोबा भावे द्वारा महाविद्यालय की सरस्वती वाटिका में लगाए गए अरडू के वृक्ष के सान्निध्य में शिक्षकों व विद्यार्थियों द्वारा मौन रहकर कर्त्तव्यबोध का आत्म चिंतन सत्र रखा गया। मौन आत्म चिंतन के पश्चात् महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. कमल सिंह कोठारी का उद्‌बोधन हुआ। स्वागत भाषण इकाई सचिव डॉ. राजकुमार लाटा ने एवं आभार प्रदर्शन डॉ. महेन्द्र खारड़िया ने किया। आर. के पाटनी राजकीय महाविद्यालय, **किशनगढ़** में प्राचार्य सहदेव सिंह बारहठ की अध्यक्षता में उपाचार्य प्रो. शंकर लाल वर्मा, डॉ. उर्मिला जेठानी, डॉ. संजय जैन, डॉ. ज्योति भाटिया व डॉ. माणक जैन ने कर्त्तव्य बोध दिवस के आयोजन में अपने विचार रखे। संचालन डॉ. प्रतिभा शुक्ला ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **राजगढ़ (अलवर)** में आयोजित कर्त्तव्यबोध दिवस के मुख्यवक्ता के रूप में डॉ. गंगाश्याम गुर्जर का उद्‌बोधन हुआ। प्रो. एस. डी. मीणा विशिष्ट अतिथि रहे, अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. सतीश कुमार शर्मा ने की। डॉ. प्रज्ञा शर्मा ने भी अपने विचार रखे। संचालन इकाई सचिव डॉ. वी. के. सिंह ने किया। इसी प्रकार राजकीय विधि महाविद्यालय, **अजमेर** में मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. अनिल गुप्ता ने अपने उद्‌बोधन में शिक्षकों को अपने कर्त्तव्य का भान रखते हुए समाजोपयोगी कार्य करने को प्रेरित किया। मुख्य अतिथि डॉ. राधेश्याम अग्रवाल रहे। डॉ. अग्रवाल ने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए कर्त्तव्य पालन को श्रेष्ठ बताया, जिससे राष्ट्र समुन्नति की ओर अग्रसर होता है। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. डी.के. सिंह ने की। इकाई सचिव प्रो. आर. सी. मीणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा संचालन डॉ. आर. एन. चौधरी ने किया। राजकीय महाविद्यालय, **ब्यावर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस पर मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. एल. एन. बल्दुवा ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने तथा अपने कर्त्तव्य का सदैव स्मरण रखने का उद्‌बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. आर. सी. लोढ़ा ने की। संचालन एवं आभार अभिव्यक्ति इकाई सचिव डॉ. बृजकिशोर ने की। डीएवी महाविद्यालय, **अजमेर** में आयोजित कर्त्तव्य बोध दिवस के मुख्य वक्ता अजमेर विभाग सचिव डॉ. अनिल गुप्ता ने अनेक महापुरुषों के जीवनांश उद्धृत करते हुए शिक्षकों को कर्त्तव्य पालन हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. लक्ष्मीकांत ने, संचालन इकाई सचिव डॉ. संतकुमार ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. महावीर प्रसाद ने किया।

राजकीय महाविद्यालय, **रतनगढ़** में कर्त्तव्य बोध दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. परमेश्वरी ढाका ने उपस्थित शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को कर्त्तव्य पालन सच्ची लगन और निष्ठा से करने की प्रेरणा दी। मुख्य वक्ता प्रो. कल्याण सिंह चारण ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि संस्कारित जीवन सदैव कर्त्तव्य के प्रति सजग रहते हुए अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन हेतु प्रेरणा देता है। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आर. के. जीनरा ने किया। राजकीय कला महाविद्यालय, **सुजानगढ़** में कार्यक्रम के मुख्यवक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. सी. एस. डोटासरा ने कहा कि मनुष्य अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति करते हुए

जीवन में सर्वाधिक संतोष और महत्व को प्राप्त होता है। कार्यक्रम का संचालन इकाई सचिव डॉ. नेमीचन्द शर्मा ने किया। प्रो. एच एस. झुरिया ने भी कार्यक्रम में संबोधन दिया। राजकीय महाविद्यालय, **चौमूँ** में आयोजित कर्त्तव्यबोध दिवस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा ने कहा कि मानव जीवन में कर्त्तव्यरत रहकर कार्य करने से सदैव संतोष मिलता है और श्रेष्ठ जीवन का आधार भी कर्त्तव्य की पूर्ति करना ही है। इसी प्रकार कोटा विश्वविद्यालय, कोटपूतली, बयाना, गंगापुर सिटी, चित्तौड़गढ़, सुमेरपुर, जैसलमेर के राजकीय महाविद्यालयों सहित कुल 113 इकाईयों में कर्त्तव्य बोध दिवस मनाया गया।

2. **नवसंवत्सर कार्यक्रम सम्पन्न** – राजस्थान विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की विभिन्न इकाईयों द्वारा नव विक्रम संवत्सर 2075 का स्वागत महासंघ की योजना अनुसार भव्य रूप से किया गया। संगठन द्वारा वर्ष प्रतिपदा के दिन महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में शिक्षक साथियों एवं विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देने, प्रसाद तथा साहित्य वितरण करने, रंगोली सजाने, चौराहों पर समाज बंधुओं का तिलक तथा मिश्री–काली मिर्च के प्रसाद से अभिनंदन करने के साथ–साथ भारतीय पंचांग की वैज्ञानिकता एवं प्रासंगिकता को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से संगोष्ठियों एवं व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

नव सम्वत्सर का महत्व प्रतिपादित करने हेतु आयोजित संगोष्ठियों की श्रंखला में **अलवर** में आयोजित संगोष्ठी में प्रदेश संगठन मंत्री डॉ ग्यारसी लाल जाट ने कालगणना की वैज्ञानिकता पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि मानव जाति के प्रतिनिधि के रूप में हमें सनातन संस्कृति के विचार को निरंतर प्रवाहमान रखना है। विचार से ही सृष्टि है, विचार ही विनाश को जन्म देता है और विचार ही सम्पूर्ण संस्कृति के कल्याण का वाहक है, इसलिए विचारपूर्वक शुभ संकल्प को बनाए रखना है। अध्यक्षता करते हुए डॉ. वंदना गंगवार एवं प्रदेश संयुक्त मंत्री डॉ. गंगाश्याम गुर्जर ने भी विचार रखे। इस मौके पर तीनों कॉलेजों की इकाइयों के सदस्य मौजूद रहे। संचालन डॉ लता शर्मा एवं धन्यवाद डॉ अमिता मीणा ने ज्ञापित किया। नवसंवत्सर की प्रात: संगठन के कार्यकर्ताओं ने शहर के नंगली चौराहे पर एकत्रित होकर मार्ग से गुजरते पथिकों का तिलक द्वारा स्वागत व मुँह मीठा करा कर नवसंवत्सर की शुभकामनाएं दी एवं वहां के गाड़िया लुहार समाज का विशेष सम्मान किया। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, **बीकानेर** में नवसंवत्सर पर आयोजित संगोष्ठी में संगठन अध्यक्ष डॉ दिग्विजय सिंह मुख्य वक्ता रहे। डॉ दिग्विजयसिंह ने हिन्दू नववर्ष की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए प्रकृति के नवीन सृजन के समय अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व की कथाओं को उद्धृत किया। कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो. सुरेश अग्रवाल ने साहित्य के अनेक आख्यानों द्वारा प्रकृति की नवरचना को नववर्ष से जोड़ा। संचालन डॉ. अभिषेक वशिष्ठ ने किया।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, **अजमेर** में मुख्य वक्ता के रूप में संगठन महामंत्री ने भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता को प्रामाणिक उद्धरणों द्वारा प्रतिपादित किया। अध्यक्षता पर्यावरण विभाग के प्रो. प्रवीण माथुर ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफेसर माथुर ने नवसंवत्सर को पूरे उल्लास और प्रसन्नता से मनाने का आह्वान किया। धन्यवाद प्रो. अरविंद पारीक ने ज्ञापित किया। राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, **उदयपुर** में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ विमल प्रसाद जी अग्रवाल का पाथेय प्राप्त हुआ। डॉ विमल प्रसाद जी अग्रवाल ने ग्रेगोरियन कैलेंडर की अप्रमाणिकता का जिक्र करते हुए यह बताया कि यूरोपीय राजाओं के नाम पर वहाँ महीनों के नाम रखे गए, उनकी कालगणना भी कहीं न कहीं भारत की काल गणना से प्रभावित हुई थी, किन्तु शोध की कमी के कारण वे उसे ठीक ठीक वैज्ञानिक आधार नहीं दे सके। दिसबंर में आने वाला यूरोपीय नववर्ष प्राकृतिक रूप से ही उस नवीनता का वाहक नहीं है, जो भारतीय पंचांगानुसार चैत्र मास की प्रतिपदा पर होती है। सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, **अजमेर** में पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर के कुलपति प्रो. भगवती प्रसाद जी शर्मा ने भारतीय कालगणना की सटीकता, प्रमाणिकता और वैज्ञानिक आधार को विस्तार से अपने उद्बोधन में सिद्ध किया। प्रोफेसर शर्मा ने बताया कि सितम्बर- अक्टूबर, जो Septa-Octa से बना है, जिनका अर्थ गणित में सात–आठ से लिया जाता है, वह नवां–दसवां महीना कैसे हो गया? जिनका प्रारंभिक कलेंडर दस माह का था, उन्होंने हिन्दू कलेंडर की वैज्ञानिकता देखते हुए बारह मासीय कलेंडर तो बना लिया किन्तु हमारी कालगणना की प्रमाणिकता नहीं ला पाए। विषय प्रवर्तन संगठन महामंत्री ने किया। संचालन डॉ अनुप आत्रेय ने किया एवं अंत में धन्यवाद ज्ञापन इकाई सचिव डॉ लीलाधर सोनी ने किया। तदनंतर महाविद्यालय के मुख्यद्वार पर आगन्तुकों को नववर्ष के हिन्दू पञ्चाङ्ग वितरित किये गए। इकाई द्वारा

अनेक वर्षों की भांति इस वर्ष भी रेलवे स्टेशन के सामने स्थित क्लॉक टॉवर तिराहे को सुसज्जित कर मार्ग से गुजरने वाले पथिकों का तिलक अर्चन कर, उन्हें मिश्री-कालीमिर्च का प्रसाद देकर नवसंवत्सर की शुभकामनाएं दी, पंचांग वितरित किये तथा वाहनों पर नवसंवत्सर के शुभकामना सन्देशों के स्टीकर चिपकाए।

कोटा के समस्त राजकीय महाविद्यालयों की संयुक्त संगोष्ठी राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय, कोटा में आयोजित की गई, जिसमें मुख्य वक्ता विभाग संघचालक श्री बृजमोहन जी रहे। श्री बृजमोहन जी ने अपने उद्‌बोधन में चैत्र प्रतिपदा को अनेक ऐतिहासिक घटनाओं से जोड़कर समाज में इसका महत्व प्रतिपादित किया। इस शुभ दिन से जुड़े अनेक अन्य प्रसंग भी उन्होंने अपने उद्‌बोधन में बताए। केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ गीता राम शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया। संचालन डॉ अशोक गुप्ता ने किया। डॉ वी.के. पंचोली ने अतिथि परिचय दिया। अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य डॉ कपिल देव ने की। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **अजमेर** में मुख्य वक्ता के रूप में श्रीमती सुप्रिया खुराना ने भारतीय नववर्ष की प्रासंगिकता पर व्याख्यान दिया। अध्यक्षता कार्यवाहक प्राचार्य डॉ चेतन प्रकाश ने की एवं संचालन इकाई सचिव डॉ एस के जैन ने किया। राजकीय विधि महाविद्यालय, अजमेर एवं एमएलवी राजकीय महाविद्यालय, **भीलवाड़ा** में संगठन महामंत्री ने मुख्य वक्ता के रूप में उद्‌बोधन दिया। विधि महाविद्यालय, अजमेर में इकाई सचिव प्रो. आर. सी. मीणा व भीलवाड़ा में इकाई सचिव प्रो. कैलाश नागर ने संचालन किया। डूंगर महाविद्यालय, **बीकानेर** में काव्य पाठ एवं वैचारिक व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संगठन अध्यक्ष डॉ दिग्विजय सिंह ने हिन्दू नवसंवत्सर पर बधाई देते हुए इसे समारोहपूर्वक मनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ ही आध्यात्मिकता से होता है। नवरात्र का दैवी पूजन, रामनवमी जैसे पवित्र उत्सव नवऊर्जा का संचार कर एक सकारात्मक दृष्टिकोण देते हैं। प्राचार्य डॉ बेला भनोत ने नवसम्वत्सर का दार्शनिक महत्व प्रतिपादित किया। डॉ अन्नाराम शर्मा ने भी विचार व्यक्त किये।

राजकीय महाविद्यालय, **श्रीगंगानगर** में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता प्राचार्य डॉ राम सिंह ने नवसंवत्सर पर नवीन ऊर्जा से परिपूर्ण होकर नए संकल्प से जीवन में नवीनता लाने का आह्वान किया। राजकीय महाविद्यालय, **सिरोही** में नवसंवत्सर के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ संजय पुरोहित, डॉ जी वी मिश्रा, डॉ उषा चौहान, डॉ अतुल भाटिया, डॉ शची सिंह, डॉ विधि शर्मा, डॉ कुसुम राठौड़ सहित अनेक शिक्षकों ने भाग लिया। महाविद्यालय शिक्षकों ने दो टोलियों में बंटकर लगभग 125 घरों में बंदनवार बांटी एवं शहर के विभिन्न भागों में नव वर्ष की शुभकामनाएं दी। साथ ही, महाविद्यालय परिसर में बहुत ही सुंदर रंगोली एवं सायंकालीन दीपदान का आयोजन किया। इसी प्रकार राजकीय महाविद्यालय, **शिवगंज** में भी डॉ संजय पुरोहित का नवसंवत्सर की प्रसांगिकता पर व्याख्यान आयोजित किया गया। राजकीय महाविद्यालय, **टोंक** में नवसंवत्सर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें प्राचार्य डॉ रामपाल बेनीवाल एवं प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ. रामस्वरूप मीणा ने उद्‌बोधन दिया। इकाई सचिव डॉ रेनू वर्मा ने संचालन किया। राजकीय कन्या महाविद्यालय, **करौली** में विभागीय सह-सचिव डॉ विजेंद्र शर्मा और इकाई सचिव प्रो. प्रह्लाद मीणा सहित अनेक शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने नवसंवत्सर पर महाविद्यालय द्वार पर तिलक लगाकर व मिश्री का प्रसाद खिला कर आगंतुकों का स्वागत किया व नवसंवत्सर की बधाई प्रेषित की।

एस. डी. कॉलेज, **ब्यावर** में नव-संवत्सर की पूर्व संध्या पर महाविद्यालय परिसर में दीपदान का कार्यक्रम रखा गया। चैत्र प्रतिपदा को मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करने के पश्चात संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने आगन्तुक शिक्षकों व विद्यार्थियों को तिलक लगा कर व मिश्री का प्रसाद खिला कर स्वागत किया व नवसंवत्सर की बधाई प्रेषित की। राजकीय महाविद्यालय, **जयपुर** में डॉ सरस्वती मित्तल, डॉ संजीव त्यागी, डॉ. पप्पूलाल गुप्ता सहित संगठन के कार्यकर्ताओं ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर आगंतुकों का तिलक लगाकर व मिश्री-कालीमिर्च का प्रसाद वितरित कर नवसंवत्सर की शुभकामनाएं प्रेषित की। एस. बी. डी. राजकीय महाविद्यालय, **सरदारशहर** में नवसंवत्सर पर संगठन इकाई द्वारा आयोजित संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ अणिमा रानी राठौर ने हिन्दू नववर्ष की बधाई देते हुए ऐसे कार्यक्रमों को भारतीय संस्कृति के चेतना हेतु आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी वैज्ञानिक रूप से सही कालगणना को जन जीवन में प्रचलित होते हुए भी राजकाज में अंग्रेजी कलेंडर का अनुसरण करना पड़ता है, जो पीड़ादायक है। संगोष्ठी में विभाग सचिव डॉ देवीशंकर शर्मा ने भी उदबोधन दिया। संचालन इकाई सह-सचिव डॉ सोहनलाल ने किया तथा इकाई सचिव डॉ. कविता शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। नवसंवत्सर पर कार्यकर्ताओं ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर आगंतुकों का तिलक लगाकर व मिश्री-कालीमिर्च का प्रसाद वितरित कर शुभकामनाएं प्रेषित की।

बांगड़ महाविद्यालय, **पाली** में नवसंवत्सर पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ वी डी दवे, विभाग सचिव डॉ अनुपम चतुर्वेदी सहित अन्य शिक्षकों ने अपने विचार रखे। तत्पश्चात कार्यकर्ताओं ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का तिलक लगाकर एवं मिश्री–कालीमिर्च का प्रसाद खिलाकर स्वागत किया। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **प्रतापगढ़** में नवसंवत्सर के अवसर पर संगठन इकाई द्वारा आयोजित संगोष्ठी में कार्यवाहक प्राचार्य डॉ नवीन कुमार झा एवं प्रो बनवारी लाल मीणा ने उद्‌बोधन दिया तथा इस अवसर पर संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों का तिलक लगाकर व प्रसाद वितरित कर नवसंवत्सर की शुभकामनाएं प्रेषित की। राजकीय जालान महाविद्यालय, **रतनगढ़** में संगठन इकाई द्वारा नवसंवत्सर पर आयोजित संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ परमेश्वरी ढाका ने नव वर्ष पर सभी शिक्षक साथियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। प्रो कल्याण सिंह चारण ने नवसंवत्सर का महत्व प्रतिपादित करते हुए अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का इस दिन से जुड़े होने पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर छात्रसंघ अध्यक्ष नितिन महर्षि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन इकाई सचिव डॉ राजकुमार जीनरा ने किया। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, **धौलपुर** में संगठन इकाई द्वारा नवसंवत्सर पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता डॉ गिर्राज सिंह मीणा रहे। डॉ मीणा ने नवसंवत्सर की ऐतिहासिक प्रासंगिकता को अनेक शास्त्रीय उद्धरणों द्वारा प्रतिपादित किया। संगोष्ठी को प्राचार्य प्रो. बी. के. कुलश्रेष्ठ ने भी संबोधित किया। संगोष्ठी के उपरांत कार्यकर्ताओं ने संकाय सदस्यों व विद्यार्थियों का तिलक लगाकर एवं प्रसाद वितरित कर स्वागत किया तथा नव वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित की। इसी प्रकार आयुक्तालय जयपुर, बूंदी, बारां,नसीराबाद, अनूपगढ़, किशनगढ़, केकड़ी, सांभर लेक, चूरू, झालावाड़, बाड़मेर, गंगापुर सिटी, पाली, जोधपुर, करौली, भरतपुर, डीग सहित कुल 105 इकाईयों द्वारा नवसंवत्सर कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न किये गए।

3. **अम्बेड़कर जयंती पर कार्यक्रम सम्पन्न** – संगठन की अनेक इकाइयों द्वारा डॉ अम्बेडकर जयन्ती पर संगोष्ठियों का आयोजन तथा श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर की स्थानीय इकाई द्वारा महात्मा ज्योतिबा फूले और बाबासाहब डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती पर सामाजिक समरसता विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस विषय पर बोलते हुए मुख्य अतिथि डॉ चेतन प्रकाश, कार्यवाहक प्राचार्य, राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर ने डॉ अम्बेडकर और ज्योतिबा फूले को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि दोनों ही महापुरुष तमाम अभावों व अवरोधों के बावजूद राष्ट्र के लिए, समाज के लिए, शिक्षा के लिए आजीवन समर्पित रहे। ज्योतिबा सर्वसमाज को, खास कर महिला शिक्षा के लिए आजीवन प्रतिबद्ध रहे। डॉ अम्बेडकर अंतिम वंचित तक शिक्षा और समानता के अधिकार पहुंचने की बात करते हैं। । उन्होंने यह भी कहा कि अच्छे लोकतंत्र के लिए अच्छे समाज का निर्माण जरूरी है। संगठन महामंत्री ने कहा कि समाज सदैव बुद्धिजीवियों से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहा है। किन्तु दुर्भाग्य से आज के बुद्धिजीवी कम्फर्ट ज़ोन में आ गए हैं और निहित स्वार्थ वाले राजनेताओं की फूट डालो राज करो की नीति आज भी समाज को विखण्डित कर अपने स्वार्थपूर्ति की रहती है। भड़काना सरल होता है। जैसा हाल ही में हुआ, ऐसे आंदोलन का श्रोत कहीं न कहीं समाज को विखण्डित कर अपना वर्चस्व बनाने की सोच में है। रचनात्मक और सकारात्मक पहल करने और राष्ट्रीय सोच के साथ परिवर्तन के लिए काम करना स्लो प्रोसेस हो सकता है, किन्तु जब तक हम अपनी अस्मिता को नहीं पहचानेगे, तब तक हम छोटे छोटे समूहों में बंट कर अपनी वृहत राष्ट्रीय पहचान खो देंगे। ऐसे में बुद्धिजीवी अपना कर्त्तव्य समझे और सामाजिक समरसता के लिए मन वचन कर्म से आगे आएं। डॉ सुशील बिस्सू ने सोशल मीडिया के भ्रामक दुष्प्रचार के प्रति सावधान किया। समाज की समरसता हेतु डॉ अम्बेडकर और ज्योतिबा फूले के योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि इन दोनों महापुरुषों को किसी जाति विशेष के नेता के रूप में सीमित करना गलत है। ऐसे महापुरुष जाति विशेष के न होकर समूचे राष्ट्र के होते हैं। डॉ विमल महावर ने अपने व्याख्यान में कहा कि बाबा साहेब जब राष्ट्रीय परिदृश्य में उभरे, तब साम्यवाद भारत में भी पैर पसार रहा था। साम्यवाद का रास्ता वर्ग संघर्ष का होता है और रक्त क्रांति में विश्वास रखता है। यह डॉ अम्बेडकर का सबल और दूरदर्शी नेतृत्व था कि उन्होंने वंचित वर्ग का लोकतंत्र में विश्वास जमाया और साम्यवाद के वर्गसंघर्ष से भारत को बचाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। डॉ मनोज बहरवाल ने कहा कि डॉ अम्बेडकर समरस समाज के निर्माण का दर्शन ले कर चले। उनके जीवन का वृहत्तर लक्ष्य राष्ट्र उत्थान का था, अत: उन्हें सिर्फ दलित चिंतक के रूप में सीमित करना उनके साथ न्याय नहीं है। डॉ मिलन यादव ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से डॉ अंबेडकर की अकादमिक व राजनीतिक उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। बाबा साहेब ने अनेक विषयों में मास्टर्स डिग्री तथा विश्व प्रसिद्ध कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दोनों से डॉक्टरेट की सर्वोच्च उपाधि प्राप्त की। बाबासाहेब के बहुआयामी व्यक्तित्व को सामने रखते हुए डॉ मिलन यादव ने उनके

अर्थशास्त्री के रूप में, संविधानवेत्ता के रुप में, उनके मजदूर वर्ग के संरक्षण के लिए, महिला शिक्षा व संरक्षण के लिए तथा शिक्षकों के हित में किये गए अनेक प्रयासों का प्रदर्शन किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ हासो दादलानी ने, धन्यवाद ज्ञापन इकाई सचिव डॉ लीलाधर सोनी ने तथा संचालन डॉ अनूप आत्रेय ने किया। अम्बेडकर जयंती के अवसर पर अजमेर विभाग के कार्यकर्ताओं ने अम्बेडकर सर्किल पर बाबा साहेब की मूर्ति पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा में संगठन की राजकीय महाविद्यालय एवं कला महाविद्यालय की इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती के उपलक्ष में समरसता दिवस मनाया गया,जिसमें मुख्य अतिथि कोटा विश्वविद्यालय के हेरिटेज विभाग के विभागाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ मोहन लाल साहू थे एवं अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. कामिनी जोशी ने की। विशिष्ट अतिथि कोटा संभाग के सहायक निदेशक डॉ. दिनेश तिवारी थे। मुख्य वक्ता डॉ साहू ने वर्तमान संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण होती जा रही जाति व्यवस्था को विषमता की मूल जड़ बताते हुए कहा कि हमें सामाजिक समरसता के लिए मन, वचन और कर्म से कार्य करना होगा। डॉ तिवारी ने कहा कि आपसी फूट के कारण देश और समाज को अतीत में अनेक बार बुरे दौर से गुजारना पड़ा है, अत: हमें अतीत से सबक लेकर समाज में सौहार्द बनाने की अधिकतम कोशिश करनी चाहिए। प्राचार्य डॉ कामिनी जोशी ने कहा कि भाईचारा तोड़ने वाले की कोई जाति नहीं होती। हमें सब को जोड़ने का कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर कोटा विभाग अध्यक्ष डॉ विजय पंचोली, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ गीताराम शर्मा,विभाग सह सचिव डॉ नवीन मित्तल,डॉ राजेश शर्मा,डॉ. अनीता वर्मा, डॉ. साधना कंसल, डॉ. शिवकुमार मिश्र, डॉ. रामावतार मेघवाल व डॉ मनोज वर्मा ने भी बाबा साहब के पुरुषार्थ और अवदान पर विचार व्यक्त किये। संचालन राजकीय महाविद्यालय, कोटा के इकाईसचिव डॉ आदित्य गुप्ता ने तथा आभार प्रदर्शन कला महाविद्यालय, कोटा के इकाई सचिव प्रो. एम.जेड.ए.खान ने व्यक्त किया। राजकीय महाविद्यालय,श्रीगंगानगर में अम्बेडकर जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में प्राचार्य डॉ राम सिंह ने डॉ अंबेडकर के जीवन दर्शन एवं राष्ट्र निर्माण में उनकी महती भूमिका पर प्रकाश डाला। बाबासाहेब ने बचपन से अत्यंत विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखा। यह उनका नीलकंठ सरीखा व्यक्तित्व ही था कि तमाम उत्पीड़न के बावजूद विश्व की प्रतिष्ठित संस्थाओं से उच्चतम डिग्रीयाँ प्राप्त कर अपनी बुद्धि का लोहा मनवाया। बाबासाहेब द्वारा राष्ट्र के संविधान निर्माण में योगदान को सदैव आदर से स्मरण किया जाएगा। इसी प्रकार जोधपुर, सिरोही, प्रतापगढ़, ब्यावर एवं अलवर में राजकीय महाविद्यालयों की स्थानीय इकाइयों द्वारा अम्बेडकर जयंती पर बाबासाहेब के चित्र पर माल्यार्पण कर संकाय सदस्यों द्वारा श्रद्धांजलि दी गयी।

4. **प्रदेश कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** – संगठन की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक 29 मार्च 2018 को देराश्री शिक्षक सदन में संगठन अध्यक्ष डॉ दिग्विजय सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सामूहिक सरस्वती वंदना से बैठक का प्रारंभ हुआ। सर्वप्रथम महामंत्री ने गत बैठक का कार्यवाही विवरण प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। इसके बाद गत बैठक के पश्चात हुई सांगठनिक और वैचारिक गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया गया। महामंत्री ने बीकानेर में 56वें अधिवेशन के आयोजन, कर्तव्य बोध एवं नवसंवत्सर कार्यक्रमों का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया कि कुल 113 इकाइयों में कर्तव्यबोध तथा 105 इकाइयों में नवसंवत्सर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शिक्षक समस्याओं के समाधान के क्रम में पदनाम परिवर्तन संबंधी अधिसूचना तत्पश्चात आयुक्तालय से 23 फरवरी 2018 का आदेश, जनवरी में 79 शिक्षकों को वरिष्ठ एवं 68 शिक्षकों को चयनित वेतनमान देने के आदेश, 5 मार्च को विधानसभा में उच्च शिक्षा मंत्री द्वारा की गई घोषणाओं, 27 मार्च 2018 को मंत्री जी व अधिकारियों से संगठन के प्रतिनिधि मंडल की हुई वार्ता, नवीन यूजीसी वेतनमान के संबंध में यूजीसी को संगठन के भेजे गए प्रतिवेदन एवं यूजीसी अध्यक्ष से भेंट आदि के संबंध में संगठन के प्रयासों की विस्तार से जानकारी महामंत्री द्वारा सदन को दी गई। पश्चात् सदस्यों द्वारा लंबित शिक्षक समस्याओं को प्रस्तुत किया गया। महामंत्री ने सदस्यों द्वारा उठाए गए विषयों के संबंध में संगठन द्वारा पहले से की जा रही कार्यवाही से सदन को अवगत कराया तथा शेष विषयों पर शिक्षकों की भावना अनुसार कार्य करने का विश्वास दिलाया। अगले सत्र में प्रदेश अधिवेशन, कर्तव्य बोध व नवसंवत्सर कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। सदस्यों द्वारा प्रदेश अधिवेशन की उत्तम व्यवस्था की सराहना करते हुए अध्यक्ष जी का आभार जताया गया। सदन को उद्बोधन देते हुए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे पी सिंघल ने नवीन यू.जी.सी. वेतनमानों को शिक्षकों के अनुकूल बनवाने में महासंघ के प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संगठन के प्रयासों से ए.पी.आई. योजना को समाप्त किया गया है। स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य के लिए पूर्व में जारी आदेश

में हुए भेदभाव को समाप्त करते हुए एक ही प्रोफेसर ग्रेड रखी गई है। एसोसिएट प्रोफेसर के लिए पीएचडी सुपरविजन की आवश्यकता को समाप्त किया गया है। लंबित पदोन्नति प्रकरणों हेतु 11 जुलाई 2016 तक एपीआई से छूट दी गई है। उन्होंने बताया कि ड्राफ्ट रेगुलेशन के बारे में देशभर के शिक्षकों की भावनाओं के अनुसार यूजीसी अध्यक्ष के सामने विस्तार से पक्ष रखा गया है और इसके सकारात्मक परिणाम आने की आशा है। इसके बाद अग्रिम कार्यक्रमों की योजना की गई। रुक्टा (राष्ट्रीय) नाम से कार्य करते हुए 25 वर्ष पूर्ण होने की भूमिका रखते हुए शैक्षिक मंथन पत्रिका के संपादक प्रो. संतोष पांडे ने संगठन की विकास यात्रा को विस्तार से सदन के समक्ष रखा। सदन में सर्वसम्मति से 16 व 17 जून को प्रदेश चिंतन बैठक आयोजित करना तय किया। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. दिग्विजय सिंह ने कहा कि नव वर्ष अपने लिए आत्ममंथन का अवसर है। हमें कार्य विस्तार और दृढ़ीकरण की ओर अपनी भूमिका के प्रति चिंतन करना है। उन्होंने कहा कि समाज में नकारात्मकता फैलाने वाले लोग हैं लेकिन हमें अपने कार्य और व्यवहार से सकारात्मकता को बढ़ाते चले जाना है अंत में गत बैठक के पश्चात दिवंगत शिक्षक साथी डॉ. कोमल सिंह मेहता भीलवाड़ा, प्रो. एस. के. भाट लालसोट और प्रो. दिवाकर दरबारी के निधन पर 2 मिनट मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना की गई। सामूहिक कल्याण मंत्र के साथ बैठक संपन्न हुई।

5. **राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न** - अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक दिनांक 3-4 फरवरी 2018 को अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में सम्पन्न हुई, जिसमें 94 सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में 17 राज्यों से आये राज्यस्तरीय संगठनों एवं विश्वविद्यालय संगठनों से प्राप्त कार्यवृत्त के अनुसार 838 इकाइयों द्वारा 264 जिलों में कर्त्तव्य बोध कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिसमें 76 हजार से अधिक शिक्षक, शिक्षार्थी एवं समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सहभाग किया। शाश्वत जीवन मूल्य अभियान के अन्तर्गत सम्पन्न कार्यक्रमों की जानकारी सम्बद्ध संगठनों द्वारा प्रदान की गई। बैठक में विभिन्न संवर्गों की समस्याओं पर विचार किया गया एवं समाधान के लिए कदम उठाने के सुझाव प्राप्त हुए। महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर ने आगामी कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी प्रदान की। विशेष रूप से एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में 24 एवं 25 फरवरी, 2018 को आयोज्य अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आयोजन की विस्तार से जानकारी प्रदान की एवं सभी आमंत्रित संभागियों को उसमें सम्मिलित होने का आग्रह किया। इसके साथ ही 5 एवं 6 मई, 2018 को दिल्ली में आयोज्य मीडिया कार्यशाला की भी जानकारी प्रदान की।

   समारोप सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख माननीय अनिरुद्ध जी देशपाण्डे ने अपने उद्बोधन में कहा कि कार्य का आधार कार्यकर्ता होता है और संगठन ही इसके लिए प्रभावी माध्यम है। इसके लिए सामूहिक पद्धति के आधार पर निर्णय व प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता है। हम सभी के कार्य की दिशा वही होनी चाहिए जिससे एकात्म राष्ट्र बने और राष्ट्र के विचार की कल्पना को पूर्ण कर सकें। महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे.पी. सिंघल ने अपने उद्बोधन में सभी राज्यस्तरीय संगठनों एवं विश्वविद्यालय संगठनों द्वारा अपनी भूमिका को ठीक प्रकार से निर्वाह करने के लिए स्वयं को प्रभावी संगठन बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। बैठक में रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर संगठन अध्यक्ष डॉ. दिग्विजयसिंह एवं महामंत्री उपस्थित रहे।

6. **वसुधैव कुटुम्बकम् विषयक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन नई दिल्ली में सम्पन्न** - शैक्षिक फाउण्डेशन एवं आर्यभट्ट महाविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 24-25 फरवरी 2018 को अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आयोजित किया गया। नई दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेंशन सेन्टर में आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत सरकार की जल एवं स्वच्छता मंत्री सुश्री उमाश्री भारती ने किया। उन्होंने उद्बोधन देते हुए कहा कि यह आर्थिक उदारवाद का दौर है। हम आर्थिक रूप से एक परिवार हो गए हैं, लेकिन यह वसुधैव कुटुम्बकम् का रूप नहीं है। हमें इस दर्शन के मूल भाव/स्वरूप को समझना होगा। पश्चिम में केवल अन्धेरा ही नहीं है, वहाँ प्रकाश भी है जिसे अपनाने की जरूरत है। हम देश की सीमाओं पर उदार नहीं हो सकते हैं, लेकिन धर्म और संस्कृति के मामले में हमेशा से उदार रहे हैं। एक व्यक्ति का दूसरे के प्रति, एक धर्म का दूसरे धर्म के प्रति, एक आस्था का दूसरे की आस्था के प्रति सम्मान का भाव ही उदारता है। भारत इस क्षेत्र में प्राचीन काल से निरन्तर कार्य कर रहा है। शायद यही कारण है कि हमारी संस्कृति किताबों में नहीं, लोगों की जीवन शैली में बसी है जिसमें लोगों का आत्मबल, नैतिक बल और स्वाभिमान दिखता है। अपने इसी बल के कारण भारत विश्व गुरु रहा है। इस सत्र में महासंघ के अध्यक्ष जे.पी. सिंघल ने स्वागत संबोधन का आरम्भ यह कहते हुए किया कि आज हम

जिस दौर में हैं वह प्रतिस्पर्धा का दौर है। यह प्रतिस्पर्धा हर क्षेत्र में है, लेकिन ज्यादातर यह नकारात्मक ही है। सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की बात आज नितांत आवश्यक है जो वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और विचारधारा दर्शन से ही आ सकती है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता शैक्षिक फाउण्डेशन के अध्यक्ष प्रो. के. नरहरि ने की। उद्घाटन सत्र में अतिथियों द्वारा शैक्षिक फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित स्मारिका वसुधैव कुटुम्बकम् का विमोचन किया गया। स्मारिका में देश के जाने माने चिंतकों एवं विद्वानों के लेख एवं शोध सारों का संकलन है। प्रथम पूर्ण सत्र की अध्यक्षता विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म. प्र.) के कुलपति श्री एस. एस. पाण्डे द्वारा की गयी। सत्र के मुख्य वक्ता पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री आरिफ मोहम्मद खान ने भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं वैश्विक शांति विषय पर अपने उद्बोधन में वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को प्राचीन भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के माध्यम से प्रस्तुत किया। विभिन्न मंत्र, श्लोक, दोहों के साथ-साथ आधुनिक रूप से स्वामी विवेकानंद जी के कथनात्मक संदर्भों का समायोजन विषय की सिद्धि एवं प्रस्तुति के प्रमुख बिन्दु रहे। महाभारत एवं अन्य सनातनी ग्रंथों की विषय वस्तु की विशालता पर बोलते हुए श्री आरिफ खान ने कई जन्मों को भी इन्हें समझने के लिए कम बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की पहचान संस्कृत वाङ्गमय है। उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों का समाधान भी बखूबी किया।

विभिन्न समांतर सत्रों में भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर वक्ताओं एवं शोध विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये, जिनमें इग्नू के प्रोफेसर दरवेश गोपाल ने सतत विकास की अवधारणा, सरगुजा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मधुर मोहन रंगा ने पर्यावरण, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. वी. के. गौतम ने विज्ञान, नीतिशास्त्र, ज्ञान एवं स्वास्थ्य, आई.आई.एम. सी. के डायरेक्टर जनरल श्री के. जी. सुरेश ने समृद्धि के सहयोग एवं प्रो. सी. बी. शर्मा-राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान नई दिल्ली ने संस्कृति की वैविध्यपूर्ण एकता पर अपने शोधपरक तथा बहुमूल्य विचारों से मुख्य वक्तव्य प्रस्तुत किए। इन समांतर सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. बलराम सिंह-निदेशक इंडिक अध्ययन संस्थान (यू.एस.ए.), डॉ. बी.एल. शर्मा-कुलपति दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर, प्रो. मदन गुप्ता-कनाडा, प्रोफेसर अशोक शर्मा-कुलपति वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कोटा, प्रोफेसर कैलाश सोडानी-कुलपति गोविन्द गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा एवं प्रोफेसर रवि टेकचंदानी-निदेशक सिन्धी भाषा विकास अकादमी नई दिल्ली ने की। अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे. पी. सिंघल ने की। इस सत्र के मुख्य अतिथि सांसद श्री भूपेन्द्र यादव रहे। समापन सत्र पर मुख्य वक्ता प्रमुख शिक्षाविद् प्रो. अनिरुद्ध देशपाण्डे ने भारतीय मूल्यों को भारतीय संस्कृति की अमिट धरोहर बताया। प्रो. देशपाण्डे ने कहा कि हमारे नैतिक मूल्य ही हमें औरों से पृथक् करते हैं। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी भी बनती है कि हम अपनी संकल्पधारा के माध्यम से सम्पूर्ण वसुधा को एक परिवार की तरह संजोकर चलें। इस सम्मेलन में देश-विदेश के चार सौ से अधिक विद्वानों-शोधार्थियों ने भाग लिया तथा केन्द्रीय विषय एवं उपविषयों से संबंधित 80 से अधिक शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया गया। सम्मेलन में रुक्टा (राष्ट्रीय) की ओर से अध्यक्ष, महामंत्री सहित 43 सदस्यों से सक्रिय सहभाग किया।

सुखद ग्रीष्मावकाश की कामनाओं के साथ

भवदीय

(डॉ. नारायणलाल गुप्ता)
[महामंत्री]

20, चित्रकूट कॉलोनी,
माकड़वाली रोड़, अजमेर-305004

अमृत वचन

''मातृभाषा माध्यम होने पर उसमें पाठ्यपुस्तकें अपने आप लिखी जायेंगी। जब वह माध्यम नहीं है तो उसमें पाठ्य-पुस्तकें क्यों लिखी जाएंगी? पाठ्य पुस्तकों के अभाव में मातृभाषाओं को माध्यम न बनाना वैसी ही बात है जैसे वृक्ष उस समय तक न बढ़े, जब तक पहले पत्ते न निकल आए या सरिता अपना प्रवाह तब तक रोक दे जब तक उसके तटों का निर्माण न हो जाए।'' ***– रवीन्द्रनाथ ठाकुर***